

---

vishvanAthAShTakam

——  
विश्वनाथाष्टकम्

——  
Document Information



---

Text title : Vishvanatha Ashtakam

File name : vishvanaatha8.itx

Category : aShTaka, shiva

Location : doc\_shiva

Author : Traditional

Transliterated by : Subramanian Ganesh sgesh at hotmail.com

Proofread by : Subramanian Ganesh sgesh at hotmail.com

Latest update : October 14, 2000

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

January 1, 2022

*sanskritdocuments.org*

---



विश्वनाथाष्टकम्



गङ्गातरंगरमणीयजटाकलापं  
गौरीनिरन्तरविभूषितवामभागम् ।  
नारायणप्रियमनंगमदापहारं  
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ १ ॥

वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं  
वागीशविष्णुसुरसेवितपादपीठम् ।  
वामेनविग्रहवरेणकलत्रवन्तं  
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ २ ॥

भूताधिपं भुजगभूषणभूषितांगं  
व्याघ्राजिनांबरधरं जटिलं त्रिनेत्रम् ।  
पाशांकुशाभयवरप्रदशूलपाणिं  
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ ३ ॥

शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं  
भालेक्षणानलविशोषितपंचबाणम् ।  
नागाधिपारचितभासुरकर्णपूरं  
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ ४ ॥

पंचाननं दुरितमत्तमतङ्गजानां  
नागान्तकं दनुजपुंगवपन्नगानाम् ।  
दावानलं मरणशोकजराटवीनां  
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ ५ ॥

तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितीयं  
आनन्दकन्दमपराजितमप्रमेयम् ।  
नागात्मकं सकलनिष्कलमात्मरूपं  
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ ६ ॥

रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागं  
वैराग्यशान्तिनिलयं गिरिजासहायम् ।  
माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाभिरामं  
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ ७ ॥

आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां  
पापे रतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ ।  
आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं  
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ ८ ॥

वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य  
व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः ।  
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं  
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥ ९ ॥

विश्वनाथाष्टकमिदं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।  
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥  
॥ इति श्रीमहर्षिव्यासप्रणीतं श्रीविश्वनाथाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Encoded by Subramanian Ganesh sgesh@hotmail.com

---

—  
*vishvanAthAShTakam*

pdf was typeset on January 1, 2022

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

